SEMESTER – IV

(Development of Indian Theater)

EC – 02

CONTEMPORARY INDIA

(2019 - 2021)

E-Content 03

- Unit – II : Topic
  - A. **औपनिवेशिक एवं आधुनिक रंगमंच**

Vetted by :

प्रो0 (डॉ0) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9835463960

डॉ0 विद्यानंद विधाता

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9472084115

औपनिवेशिक एवं आधुनिक रंगमंच

गुजराती रंगमंच – पारसी थियेटरों ने आरंभ में अपने नाटकों में गुजराती को प्रश्रय दिया था। अतः गुजराती रंगमंच का बाल्यकाल उसी की छाया में पनपा, पर धीरे–धीरे गुजराती रंगमंच उससे स्वतंत्र रूप में विकसित होने लगा।

गुजारती रंगमंच का पुनर्जन्म तो पारसी थियेटरों के प्रतिरोध में हुआ। प्रसिद्ध गुजराती नाटकार रणछोड़ भाई उदयराम सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नाम है। पारसी थियेटरों के विदेशीपन और गुजराती भवाई नाट्यमण्डली द्वारा प्रस्तुत हल्के, ग्राम्य एवं उपहासपूर्ण नाटकों को देखकर नई शैली की नाट्य–रचना की ओर उनका ध्यान आकर्षित हुआ। प्रारंभ में उन्होंने गुजराती थियेटरों के लिए संस्कृत नाटकों के रूपांतरण प्रस्तुत किए। बाद में सत्य हरिश्चन्द्र और नलदम्यन्ती जैसे पौराणिक तथा ललित–दुख–दर्शक जैसे दुःखांत सामाजिक नाटक को भी उन्होंने प्रस्तुत किया। नर्मदाशंकर ने द्रौपदी–दर्शन, सीताहरण और बाल–कृष्ण जैसे पौराणिक नाटकों को रंगमंच पर सफलता के साथ प्रस्तुत किया। सन् 1878 ई0 में मौवीं आर्य सुबोध नाटकमंडली की स्थापना हुई और उसका त्रिविक्रम नाटक लगातार पॉच वर्षों तक चलता रहा और चन्द्रहास की लोकप्रियता बहुत दिनों तक बनी रही। 19वीं सदी के अन्त में गुजराती रंगमंच विकास की और तेजी से बढ़ा। व्यवसाय–बुद्धि से प्रेरित हो गुजरातियों ने कई नाटक–कंपनियॉ खोलीं, जिनमें नरोत्तम गुजराती, बम्बई गुजराती और देशी गुजराती कंपनी, गुजराती नाटकों के प्रदर्शन में रूचि लेती रहीं।

पिछले अर्द्धदशक में रमणभाई, नानालाल, कन्हैयालाल मणिकलाल मुंशी, रमणलाल देशासई, चन्द्रवदन मेहता, श्रीधाराणजी आदि के नाटकों ने गुजराती रंगमंच को समृद्ध किया है। मुंशी, मेहता और देसाई के नाटक और भी अधिक लोकप्रिय रहे हैं और इनके नाटकों का अभिनय गुजराती रंगमंच पर निरंतर होता रहा है। मुंशी और मेहता के नाटकों और उसमें प्रयुक्त नाट्य–शिल्पों से भारत के अन्य रंगमंचों को नई दिशा प्राप्त हो रही है। मुंशी का ऐतिहासिक नाटक देवी ध्रुवस्वामिनी खूब लोकप्रिय है। देसाई–लिखित स्वर्णोदय और स्वर्णयुग ढाई सौ दिनों तक प्रदर्शित हुए। मेहता ने अपने भावपूर्ण अभिनय, कुशल – निर्देशन, अभिनय योग्य रंगमंचीय नाट्य–कृतियों द्वारा गुजरात में अव्यावसायिक रंगमंच को खूब ही समृद्ध किया है। मजदूर जीवन पर आधारित उनका आग गाड़ी नाटक बहुत ही लोकप्रिय है।

गुजराती रंगमंच की पुरानी परंपरा गौरवशाली रही है, पर उसका भविष्य सुनहला नहीं अन्धकाराच्छन्न–सा लगता है। यद्यपि अन्य नाट्य–मंडलियॉ और पचहत्तर वर्ष पूर्व स्थापित देशी नाटक–समाज इसके उत्थान की दिशा में प्रयत्नशील हैं।

संदर्भ– सूची

1. डी. नाडकर्णी, इण्डियन ड्रामा, पब्लिकेशन डिविजन, 1956
2. जे.सी. माथुर, हिन्दी ड्रामा और थियेटर, इण्डियन ड्रामा